हनुमानबाहुक

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबिबालबरनतनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुकी काल जनु।।
गहन-दहन-निरदहन-लंक निःसंक, बंक-भुव।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव।।
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट।
गुनगनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन, सकल-संकट-बिकट।।१।।

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन।।
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल बल भानन।।
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहूँ नहिं आवत निकट।।२।।

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य भट-असुर-सुर,
सर्व-सरि-सम समरत्थ सूरो।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो।।
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल,
बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो।

दुवन-दल-दमन को कौन तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत रूरो।।३।।

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो।।
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।
बल कधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो।।४।।

भारत में पारथ के रथकेतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो।
कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो।।
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँगहूं तें घाटि नभतल भो।
नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखे जग जीवन को फल भो।।५।।

गोपद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक-ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो।।
संकटसमाज असमंजस भो रामराज
काज जुग-पूगनिको करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो।।६।।

कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ैं मानो
नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो।
जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो,
महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो।।
कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधन को
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान-
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो।।७।।

दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको, तू
अंजनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय-सोच-समन, दुरित-दोष-दमन,
सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो।।

दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान-गुणवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो।।८।।

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को।
पाप-ताप-तिमिर तुहिनबिघटन-पटु,
सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोरको।।
लोक-परलोकतें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को।।९।।

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानइत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,
करुना-कलित मन धारमिक धीरको।।
दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जनको,
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको।
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको,
सेवक सहायक है साहसी समीर को।।१०।।

रचिबे को बिधि जैसे, पालिबे को हरि, हर
मीच मारिबे को, ज्याइबे को सुधापान भो।
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिवे को हिम भानु भो।।
खल-दुख-दोषिबे को, जन-परितोषिबे को,
माँगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो।
आरतकी आरति निवारिबेको तिहूँ पुर,
तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो।।११।।

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँकको।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँकको।।
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँकको।
सब दिन रूरो परे पूरो जहाँ-तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँकको।।१२।।

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,

तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी।।
केसरी किसोर बंदीछोर के नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की।
बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की।।१३।।

करुनानिधान, बलबुद्धि के निधान, मोद-
महिमानिधान, गुन-ज्ञान के निधान हौ।
वामदेव-रूप, भूप राम के सनेही, नाम
लेत-देत अर्थ-धर्म काम निरबान हौ।
आपने प्रभाव, सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक-बेदबिधि के बिदुष हनुमान हौ।
मन की, बचन की, करम की तिहूं प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ।।१४।।

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं।
देव-बंदीछोर रनरोर केसरीकिसोर,
जुग-जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं।।
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं।

बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं।।१५।।

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो।।
साहेब सेवक नाते ते हातो कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो।
दोष सुनाये तें आगेहुँ को होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो।।१६।।

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिर को कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीबनिवाज बिराजत बैरिन के उर साले।।
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरीके-से जाले।
बूढ़ भये बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले।।१७।।

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंकसे बंक मवासे।
तैं रन-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से।।
तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख-दोष दवा-से।
बानर-बाज बढ़े खल-खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवा-से।।१८।।

अच्छ बिमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो।।
राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीरदुलारो।
पापतें, सापतें, ताप तिहूं तें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो।।१९।।

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये।।
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,
मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीरके दुलारे रघुबीरजू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये।।२०।।

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो
दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसीके, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये।।
बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलीको, निहारि सो निवारिये।
केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये।।२१।।

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये।
राम के गुलामनिको कामतरु रामदूत,

मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये।।
साहेब समर्थ तोसों तुलसीके माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,
मकरी-ज्यौं पकरिकै बदन विदारिये।।२२।।

राम को सनेह, राम साहस लखन सिय,
राम की भगति, सोच संकट निवारिये।
मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव-जामवंत को भरोसो तेरो भारिये।।
कूदिये कृपालु तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लङ्किनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये।।२३।।

लोक-परलोकहूँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूं निहारिये।
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीव जाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये।।
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये।

बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये।।२४।।

करम-कराल-कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी।।
आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी-ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी,
बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी।।२५।।

भालकी कि कालकी कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिषम पाप-ताप छलछाँहकी।
करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूट की,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी।।
पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी।
आन हनुमान की दोहाई बलवान की
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँहकी।।२६।।

सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लङ्किनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार,
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है।।
तोरि जमकातर मदोदरि कढ़ोरि आनी,
रावन की रानी मेघनाद महतारी है।
भीर बाँहपीर की निपट राखी महाबीर,
कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है।।२७।।

तेरी बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहुकी।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी।।
साम दान भेद बिबिध बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहुकी।
आलस अनख परिहासकै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहुकी।।२८।।

टूकनिको घर-घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यौं कृपाल नतपाल पालि पोसो है।
कीन्हीं है सँभार सार अञ्जनीकुमार बीर,

आपनो बिसारिहैं न मेरेहू भरोसो है।
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरीको मरन खेल बालकनिको सो है।।२९।।

आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,
बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है।
करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है।।३०।।

दूत रामराय को, सपूत पूत बायको,
समत्थ हाथ पायको सहाय असहायको।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको।।
एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन कायको।

थोरी बाँहपीर की बड़ी गलानि तुलसीको,
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभाय को।।३१।।

देवी देव दनुज मनु मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी बाम,
रामदूत की रजाइ माथे मानि लेत हैं।।
घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनूमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं।।३२।।

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घर के।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबर के।
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसे कनिगर के।।३३।।

पालो तेरे टूकको परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।
भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये।।
अंबु तू हौं अंबुचर, अंबू तू हौं डिंभ, सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसीकी बाँह पर लामी लूम फेरिये।।३४।।

रामगुलाम तुही हनुमान
गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो।
पाल्यो हौ बाल ज्यों आखर दू
पितु मातु सों मंगल मोद समूलो।।
बाँहकी बेदन बाँहपगार
पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्री रघुबीर निवारिये पीर
रहौ दरबार परो लटि लूलो।।३५।।

कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं,
पापके प्रभाव की सुभाय बाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,

सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे।।
लायी तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहूं तावरे।
भूतनि की आपनी पराये की कृपानिधान,
जानियत सबहीकी रीति राम रावरे।।३६।।

पायँपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।
देवभूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहिपर दवरि दमानक सी दई है।।
हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें,
ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।
कुंभज के किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूं भई है।।३७।।

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं।
पर्‌यो लोकरीति में पुनीत प्रीति रामराय,
मोहबस बैठी तोरि तरकितराक हौं।।
खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अञ्जनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं।

तुलसी गोसाइँ भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौ।।३८।।

असन-बसन-हीन बिषम-बिषाद-लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को।
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभाय को।।
नीच यहि बीच पति पाइ भरुहोइगो,
बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि-फूटि निकसत लोन रामराय की।।३९।।

जिओं जग जानकी जीवन को कहाइ जन,
मरिबेको बारानसी बारि सुरसरिको।
तुलसी के दुहूं हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको।।
मोको झूठो साँचो लोग राम को कहत सब,
मेरे मन मान है न हरको न हरिको।।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को।।४०।।

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेस को महेस मानो गुरुकै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै।।
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,
समाधि कीजै तुलसीको जानि जन फुरकै।।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै।।४१।।

कहों हनुमानसों सुजान रामरायसों,
कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये।
हरष बिषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये।।
माया जीव काल के करमके सुभायके,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौं हूं रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये।।४२।।

घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घन घटा धुकि धाई है।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,

रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है।।
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें तैं उड़ाई है।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है।।४३।।

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं।
रामनाम जपजाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं।।
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।
तुलसी सँभारि ताड़का-सँहारि भारी भट,
बेधे बरगद से बनाइ बानवान हैं।।४४।।

।।हनुमानबाहुक पूर्ण।।

❖